पाठ 11. सूरज, चंदा और तारे

पाठ का परिचय

यह बात उन दिनों की है जब धरती पर मनुष्य पैदा नहीं हुए थे। चारों ओर धरती और सागर ही फैले थे। उन दिनों चंदा भी धरती पर ही रहता था। सूरज और सागर में बनती नहीं थी। जब दोनों लड़ते तो चंदा बीच-बचाव करता। एक दिन सूरज के ताप से परेशान सागर ने सूरज को डूबो देने की सोची। सूरज डर के मारे भागने लगा। सूरज और चंदा दोनों पेड़ पर चढ़ गए। सागर ने वहाँ भी उनका पीछा किया। अंत में वे दोनों आसमान में चढ़ गए। वहाँ सागर का पहुँचना बहुत मुश्किल था। कुछ ही दिनों में सागर को दोनों की याद आने लगी। उसने भाप बनकर अपना रूप बदला और ऊपर उन दोनों के पास जा पहुँचा। उस दिन सूरज, चंदा और सागर एक-दूसरे से मिलकर खूब रोए। कहते हैं, सूरज और चंदा के आँसू तारों में बदल गए और सागर के आँसू बारिश की बूँद बनकर धरती पर टपक पड़े।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हमारा व्यवहार चंदा की तरह होना चाहिए, जो सभी को सुख और शीतलता देता है। हमें आपस में मिल-जुलकर रहना और एक-दूसरे के साथ सहयोग करना सीखना चाहिए।

पाठ का वाचन

पहले बच्चों को लोककथा का मौन वाचन करने को कहें। बच्चे जब कथा को पढ़ लें तो उनसे कथा से जुड़े प्रश्न पूछें। जैसे –

- यह बात किन दिनों की है?
- किस-किस की नहीं बनती थी?
- सूरज के ताप से कौन परेशान था?
- सागर ने क्या सोच लिया था?
- सूरज और चंदा कहाँ भागे?
- सागर के आँसू क्या बन गए?

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जानते हुए कक्षा में चर्चा करें –

- धरती से जुड़ी कोई कहानी तुम जानते हो?
- धरती, चाँद और तारे एक साथ कैसे रहते होंगे?
- सूरज और चाँद आसमान में कैसे गए होंगे?
- यह कथा तुम्हें कितनी सच्ची लगती है?
- ऐसी ही कोई अन्य कथा कक्षा में सुनाओ।